Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 8 | ISSUE : 12 | DECEMBER 2022

आधुनिक विमर्श और भारतीय साहित्यिक मूल्य : यथार्थ और विभ्रम

डॉ. गोपीराम शर्मा [1]

[1] (सहायक प्रोफेसर, हिन्दी), डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय, महाविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)–335001

ABSTRACT:

आधुनिकता और उत्तर–आधुनिकता जैसे विचार भारत में तब प्रभावी हुए, जब यूरोप से निकलकर 18वीं सदी के बाद पूरे विश्व में फैले। इन विचारों ने भारत के मूल्यों और संस्कृति को बहुत हद तक प्रभावित किया। एक सदी बाद आधुनिकता यूरोप में असफल हो गई। तब उन्होंने उत्तर–आधुनिकता का नारा दिया। अब भारत की स्थिति विचित्र सी हो गई है, वह एक साथ तीन युगों – मध्यकाल, आधुनिककाल एवं उत्तर–आधुनिक में जी रहा है। भारत न तो इन विचारों से पूरा लाभ ले सका, प्रत्युत अपने स्वयं के ज्ञान को भुला बैठा है। ये नए विचार या प्रत्यय भारत के लिए बहुत हितकर नहीं हैं।

KEYWORDS:

आधुनिकता, उत्तर–आधुनिकता, ज्ञानोदय, मनुष्य, दुंदभी, औपचारिकता, वैदिककाल, भौतिकता, विखंडन, साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, पूंजीवाद, षड़यंत्र, आदिवासी।

आधुनिकता और उत्तर–आधुनिकता जैसी अवधारणाएँ हालांकि विदेशी धरती से उत्पन्न हुई हैं पर इनप्रत्ययों ने हिन्दी साहित्य को भी काफी हद तक प्रभावित किया है। पूरी 19वीं सदी जहां आधुनिकता के नाम रही, वहीं 20वीं सदी उत्तर–आधुनिकता के लिए जानी गई है।

अठारहवीं शताब्दी में यूरोप में ज्ञानोदय के नाम से वैचारिक आंदोलन चला, जिसने दुनिया को अमिथकीय एवं गैर रोमांटिक चिंतन से रूबरू करवाया। इस आंदोलन से निकली प्रवृतियों को आधुनिकता कहा जाने लगा। यह माना गया कि जो जितना आधुनिक है, वह उतना ही मनुष्य है। बुद्धि, तर्क, विज्ञान, यथार्थ आदि सूक्ष्म वृत्तियों को स्थान देकर मस्तिष्क को परिष्कृत किया गया, वहीं नगरीकरण, मशीनीकरण, टेक्नोलॉजी, पाश्चात्य फैशन आदि स्थूल चीजें व्यवहार में आती गईं। इस प्रकार आधुनिकता अन्तर्मुखी संकल्पों एवं आधुनिकीकरण के बहिर्गत अवस्थाओं के मेल से विश्व आधुनिक होने लगा। मनुष्य अपना कर्ता, उद्धारक व नियंता खुद ही बन गया। धर्म, विश्वास, आस्था, ईश्वर, भाग्य, परम्परा, संस्कृति आदि सब आधार आधुनिकता ने अमान्य कर दिये। मनुष्य अपने किये का भार अब किसी पर नहीं डाल सकता था। उसके लिए कोई मसीहा मदद हेतु नहीं आयेगा। आधुनिकता ने कहा कि हर मनुष्य को अपना क्रूस स्वयं ढोना होगा।

इस ज्ञान–विज्ञानाधारित व्यवस्था ने लगभग पूरे विश्व को प्रभावित किया। ज्ञान व बुद्धि के रथ पर बैठा मनुष्य प्रगति की लम्बी यात्रा तय कर गया। एक से दो शताब्दियों में ज्ञान की दुंदभी चहुंदिस सुनाई देने लगी। पर यहीं से कुछ इसके साइड इफेक्ट्स भी लक्षित हो चले। भौतिक विकास, आर्थिक समृद्धि, इहलौकिकता की तीव्र गति ने आदर्शों एवं मूल्यों की भेंट चढा दी प्रत्युत अपना भी कोई आदर्श स्थापित नहीं कर पायी। इस प्रकार आधुनिकतावादी विकास अन्तर्विरोधों का कारण बनता रहा और कृत्रिमता, दिखावटीपन, औपचारिकता, यांत्रिकता, घुटन, संत्रास आदि प्रवृतियाँ मानस में घर करने लगी। आधुनिकता ने मनुष्य को सूनापन, पीड़ा, अकेलापन, वेदना, दिशाहीनता, व्यर्थता, अजनबीपन आदि के दुखों से भर दिया। खंडित व्यक्तित्त्व, सम्बन्धों का विघटन और जुड़े रहने की छटपटाहट लोगों में ऊब बनकर उभरी और इस प्रकार आधुनिकता की तीव्र प्रतिक्रिया से उकता कर लोगों का आधुनिकता से मोह भंग होने लगा। आधुनिकता के जन्म में ही उसके अवसान के कारण छुपे हुए थे। आधुनिकता ने मनुष्य को सब आधारों से हीन करके अपनी शुरुआत की थी। धर्म, नैतिकता, संस्कृति भाग्य और ईश्वर के आधार भले ही आधुनिकता के पैमाने पर, विज्ञान और बुद्धि की कसौटी पर खरे न उतरते हों, मनुष्य के सुखी जीवन के लिए आवश्यक आधार थे। यह भारतीय मनीषा का ही कमाल था कि मानव कल्याणोचित तत्त्वों को धर्म, संस्कृति व मूल्यों का फलेवर लगाकर प्रस्तुत कर दिया जाता था। हमारे यहाँ आधुनिकता के तत्त्व वैदिक काल से दिखाई देते हैं। बुद्ध, कौटिल्य, कबीर, मीरा आदि आधुनिक व्यक्तित्त्व हैं। पर मजे की बात यह है कि इस आधुनिकता को आधुनिकता नहीं माना जा सकता। क्यों कि यूरोप में धर्म विज्ञान विरोधी रहा, पुनर्जागरण–धर्मसुधार व 18वीं शताब्दी से पहले किसी सिद्धांत–दर्शन को मानव कल्याणकारी माना नहीं जा सकता। अतः ऐसे में 18वीं शताब्दी में यूरोप में उगी–जमी 'आधुनिकता' को ही शेष विश्व को 'आधुनिकता' मानने के लिए विवश होना पड़ा। यह वह समय था जब ब्रिटेन का सूर्य कभी अस्त नहीं होता था। यूरोप की कॉलोनियां पूरे विश्व भर में थी अतः यूरोप को यह मनवाने में जोर भी नहीं आया कि आधुनिकता कब से शुरू मानी जाए?

अच्छा! एक और बात है। आधुनिकता सुख के सपने दिखाती है। वह समानता–स्वतंत्रता का नारा देती है। अतः आधुनिकता के आगमन के लिए जरुरी है पहले व्यक्ति व समाज कष्ट में हो। भारत में ऐहिक कष्टों के बारे में ज्यादा चेतना नहीं रही। संतोष, सादा जीवन, अपरिग्रह, त्याग, दान आदि वृत्तियां हमारे आचरण का हिस्सा रही हैं। यूरोपीयनो ने हमें पहले यह समझाया कि हम कष्ट में है, हम दुःख में हैं और सुखी होने के लिए दौड़ दौड़नी है, सबको साथ लेकर नहीं, एक–दूसरे को गिराते हुए। मनुष्य स्वयं का नियंता खुद ही है। सुख भौतिकता से मिलेगा और इसके लिए प्रकृति का दोहन करना होगा। प्रकृति कोई ईश्वर या दैवीय शक्ति नहीं है, यह मनुष्य के लिए है। प्रकृति के शोषण व भौतिकता के विकास से सब गडमड हो गया। पारिस्थितिकी असंतुलन व मानसिक अस्थिरता लिए आधुनिक व्यक्ति कष्टमय तो हो गया पर सुखी न हो सका।

अब 20वीं शताब्दी में आधुनिकता से मार खाया व्यक्ति उत्तर–आधुनिकता के मार्ग पर बढ चला है। उत्तर–आधुनिकता को तो परिभाषित करना ही टेढा काम है। इसमें आधुनिकता का कहीं विरोध है, कहीं समावेश और कहीं उससे कुछ इतर ही कोई प्रत्यय है। उत्तर–आधुनिकता आधुनिकता के टेक्नो–वैज्ञानिक रैखिक विकास, निरन्तर प्रगति, इतिहास और सार्वभौमिकता के बदले इस बात पर केन्द्रित है कि एक समूह दूसरे समूहों से अपनी मूल संरचनाओं में अलग होता है। उत्तर–आधुनिकता की दृष्टि विखंडन में है वह चीजों को तोड़ कर देखेगी। विक्रेन्दीकरण को यहाँ तवज्जो मिलने से हाशिए पर स्थित स्त्री, दलित, समलैंगिक व तीसरी दुनिया के देश केन्द्रीकरण ओर आ रहे हैं। अब इस बदलते परिदृश्य मे ज्ञान, यथार्थ और सत्य जैसे तत्त्वों की जगह संशय, संदेह और अस्पष्टता की छाया गहराती जानी लगी है। अब यह कहा जाने लगा कि सत्य होता नहीं, वरन रचा जाता है। सत्य की खोज न होकर सत्य का आविष्कार होता है। अतः सत्य कई हो सकते हैं। यह विचार भी यूरोप में विशेषतः फ्रांस व जर्मनी में जन्मा। इस विचार में मानविकी, भौतिक विज्ञान और साहित्य को अलग करने वाली सीमाएँ जाती रही हैं। सिद्धांत तथा व्यवहार तथ्य और भाषा, संस्कृति और जीवन के भेद मिटने लगे। शब्दों का कोई पूर्व निश्चित, परिशुद्ध ओर आंतरिक अर्थ नहीं होता। शब्दों के कई खेल, यथार्थ के कई रूप व सत्य के कई दशाएँ होती हैं। उत्तर–आधुनिक लेखक मुक्त पाठ रचता है। वह जो कुछ लिख रहा है, वह उसके नियंत्रण में ही नहीं है।

लीजिए, मध्यकाल व आधुनिक युग से निकल कर एकाएक हम आपको उत्तर–आधुनिक बना डाला है। इसका अर्थ हुआ हम साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद से पूरी तरह बाहर निकल आए हैं। जबकि विसंगति यह है कि अफ्रिका, दक्षिण अमेरिका और एशिया के बहुत से देश अब भी आधुनिकता से वंचित है। ये देश भूमंडलीकरण के कारण एक नये ढंग के साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद का शिकार हो रहे हैं। तो क्या हम उत्तर–आधुनिक होकर समग्रता के विरुद्ध हो जाएँ और विवेक व स्वतंत्रता की रक्षा की बातें छोड़ दें? आधुनिकता ने जिन संजीदा प्रश्नों को छेड़ा है, क्या उनको अब अप्रासंगिक मान लें? मतलब अब उत्तर–आधुनिक युग आ गया है और अब सत्य, न्याय, समता, स्वतंत्रता जनवाद और समाजवाद का कोई अर्थ नहीं रहा। आज का वैश्विक पूंजीवाद ही इसका परम सत्य है जिसे वृद्ध पूंजीवाद या लेट कैपीटलिज्म कहा जा सकता है। पहले अमेरिका उत्तर–आधुनिकता शब्द से बचता था अब वही उस विचार का सबसे बड़ा प्रस्तोता बना हुआ है। कारण है उसने अपने पूंजीवाद को इस बहाने चलाना है। उत्तर–आधुनिकता ने इतिहास, यथार्थ का अंत कर किया है। अतः पूंजीवाद की पूर्व दमनकारी षड़यंत्रकारी गतिविधियाँ हमें याद नहीं रखनी है। उत्तर–आधुनिकता ने यदि दलित, स्त्री, आदिवासी व अन्य को केन्द्र में लाने की वकालत की है तो वहाँ भी कुछ अस्पष्ट सी स्थिति है। उत्तर–आधुनिकता केवल केन्द्र पर प्रहार करती है और

परिधि या हाशिए के लोगों को केन्द्राभिसारी। पर वह 'अन्य' की अस्मिता या पहचान जैसी समस्या का समर्थन नहीं करती। क्योंकि यह उत्तर–आधुनिकता में नहीं होता। यहाँ स्त्री–दलित के आंदोलन तो 'अस्मिता' के लिए ही संघर्षरत् है। दूसरी ओर स्त्री, दलित आदि स्वयं एक केन्द्र का निर्माण कर एक समग्रतावाद को रच रहे हैं जिसमें बहुलतावाद कभी समाप्त हो सकता है। उत्तर–आधुनिकता ने साहित्य को केवल टैक्स्ट में बदलकर रख किया है और लेखक अनुपस्थित हो गया है। किसी कृति के अर्थ युग व व्यक्ति के अनुसार तो उत्तर–आधुनिकता से पूर्व भी निकलते रहे हैं। अब केवल 'पाठ' को ही साहित्य मान लेने की जिद क्यों?

सबसे बड़ा प्रश्न है कि आधुनिकता और उत्तर–आधुनिकता जैसे सम्प्रत्यय भारत के लिए कैसे भला कर पाएँगे? आधुनिकता की असफलता की घोषणा तो यूरोप ने कर ही दी है। हम अब तक आधुनिक हो ही नहीं पाये। उत्तर–आधुनिकता भी विद्वानों, विचारकों व साहित्य के द्वारा भारत में प्रवेश कर चुकी है और यूरोप में उत्तर–आधुनिकता के अंत की घोषणा की आवाजें भी उठ रही हैं। यह बहुत गलत हो रहा है हमारे साथ। हम एक साथ मध्यकाल, आधुनिक एवं उत्तर–आधुनिक तीनों युग में चल रहे हैं। हम धर्म–ईश्वर को बिल्कुल छोड़ नहीं पा रहे हैं। न ही शुद्ध धार्मिक–आध्यात्मिक किस्म के रहे हैं। आधुनिकता से भी मन भरा नहीं है। स्वतंत्रता, समानता, लोकतंत्र जैसी बातों को अनदेखा नहीं कर सकते और उत्तर–आधुनिक बनने को मन चाह रहा है। आधुनिकता ने कुछ खास दिया नहीं तो इस उलझी–जटिल उत्तर–आधुनिकता को क्योंकर अपना लें? हमारी स्थिति छद्म बौद्धिकों की–सी है। हम पश्चिम से आनी वाली हर नई चीज़ को बिना जांचे–परखे अपना लेते हैं। उसे सही मान कर व पहले चल रही व्यवस्था व चीजों को पिछड़ी व खराब कहकर त्याग देते हैं।

19वीं शताब्दी के मध्य में भारतीय आधुनिकता ने हमारे समाज व इतिहास को प्रभावित किया। आधुनिकता के निर्विवाद महत्त्व के बाद भी आधुनिकता मनुष्य को पूर्ण रूप से सुखी बनाने का संकल्प पूरा न कर सकी। आधुनिकता ने मनुष्य को धर्म, परम्परा व इतिहास से काटकर सुख की दौड़ में लगा दिया पर आधुनिकीकरण के बाह्य साजो सामान के ढेर पर बैठा मनुष्य आज खाली–सा है। उसके अन्दर के आनंद का सोता सूख गया है। आधुनिकता ने संकल्प, विकल्प और निर्णय अनिर्णय के तमाम अन्य तार तोड़कर केवल 'मानव के मस्तिष्क' को ही एक मात्र सही व उचित अधिष्ठाता बना दिया। आज मनुष्य का मस्तिष्क पूरी दुनिया के बारे में फैसलों का 'एक्स्ट्रा लॉड' लिए घूम रहा है। इसलिए बाह्य तमाम रंगीनियों एवं सुख के साजो सामान के साथ मनुष्य का अन्तस् रिक्त व मस्तिष्क तनाव से ग्रस्त है। समकालीन घबराया व निर्णय न लेने के अपराध बोध को भोगता मनुष्य आधुनिकता पर प्रश्न चिह्न लगा रहा है।

इसी प्रकार उत्तर–आधुनिकता भारत के लिए कोई श्रेष्ठकारी विचार नहीं है। यह विचार न तो आधुनिकता के 'समानता, बंधुत्व और स्वतंत्रता' के सिद्धांत को मानता है और न किसी अस्मिता, विवेक या स्वायत्तता को। यह अवधारणा किसी भी प्रकार की नयी अवधारणा या विचार दर्शन की संभावनाओं पर विराम लगाती है। यह विचार साम्राज्यवाद–पूंजीवाद के लिए ठीक बैठता है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियां अपने व्यवसाय करने के उद्देश्यों से यह विचार लेकर आयी हैं। हमारे देश में गरीबी व शोषण से ध्यान हटाकर यथास्थितिवाद के पोषण का साम्राज्यवादी षड़यंत्र उत्तर–आधुनिकतावाद है।

कह सकते हैं कि इन विचारों का कितना ही योगदान विश्व के लिए रहा हो या इन्होंनें जितना भी विश्व को प्रभावित किया हो, भारत के लिए उनकी उपादेयता बहुत अधिक नहीं है। हमारे यहां का जो चिंतन मानव कल्याण हेतु हो चुका है वह केवल भारत के जन के लिए ही नहीं, विश्वजन समुदाय को दिशा दिखाने में समर्थ है।

REFERENCES

1. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. बच्चन सिंह, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1986 ई.।
2. आधुनिकता बनाम उत्तर–आधुनिकता, डॉ. संजीव कुमार जैन, वाङ्मय बुक्स, अलीगढ़, 2013 ई.।
3. आधुनिकता और हिन्दी साहित्य, डॉ. इन्द्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993 ई.।
4. उत्तर–आधुनिकता और दलित साहित्य, कृष्णदत्त पालीवाल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008 ई।
5. आधुनिकताः एक पहचान, डॉ. चन्द्रभान रावत, देवनागर प्रकाशन, जयपुर, 1985 ई।
6. उत्तर–आधुनिकता परिदृश्य, सुधीश पचौरी, सचिन प्रकाशन, दिल्ली, 1994 ई।
7. उत्तर–आधुनिकता और समकालीन कथा साहित्य, डॉ. लक्ष्मी गौतम, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2013 ई।
8. उत्तर–आधुनिकता : उत्तर संवाद, मुक्ता, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006 ई।

लेखक परिचय

डॉ. गोपीराम शर्मा

जन्म : 5 फरवरी, 1976, हनुमानगढ़

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी), एम.ए. (इतिहास), बी.एड., पीएच.डी. (हिन्दी), स्लेट (हिन्दी), डिप्लोमा इन जर्नलिज्म एंड मास कम्यूनिकेशन

सेवाएं : विद्यालयी शिक्षा में अध्यापक, प्राध्यापक व प्रधानाध्याक एवं वर्तमान में महाविद्यालयी शिक्षा में सहायक प्रोफेसर हिन्दी

शिक्षण अनुभव : 18 वर्ष

शोध निर्देशन : 03 पीएच.डी, 23 एम.फिल

प्रकाशन :

मनोहर श्याम जोशी के साहित्य में आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता (पुस्तक)
स्त्री चिन्तन : सामाजिक – साहित्यिक दृष्टि (पुस्तक)
68 अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं में शोध आलेख प्रकाशित

उपलब्धियाँ :

- 30 संगोष्ठियों (अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय) में विषय विशेषज्ञ / मुख्यवक्ता
- विश्वविद्यालय अनुदान की लघुशोध परियोजना पर कार्य पूर्ण
- 70 अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय संगोष्ठियों में शोध पत्रों का वाचन
- महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर में शोध निर्देशक एवं शोध अधिकारी
- ओ.पी.जे.एस. विश्वविद्यालय, राजगढ़ (चूरू) में विजिटिंग फैकल्टी
- आकाशवाणी सूरतगढ़ में वाणी प्रशिक्षक के रूप में उपस्थिति।

पुरस्कार :

साहित्य दीप सम्मान (2022), साहित्य वैभव सम्मान (2021), यशपाल साहित्य सम्मान (2021), कालेश्वर ज्योति एवं साहित्य अलंकरण (2021), सरस्वती दीप सम्मान (2021), उत्कृष्ट सृजन सम्मान (2021), आदर्श शिक्षक सम्मान (2020), कोरोना वॉरियर्स सम्मान (2019), श्रीमती प्यारी देवी घासीराम सिहाग साहित्य सम्मान (2019), उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान (2017), राज्य स्तरीय सेवा योजना पुरस्कार (2015), प्रशस्ति पत्र जिला प्रशासन (2015) एवं अन्य पुरस्कार।

सम्प्रति :

सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय श्रीगंगानगर

सम्पर्क :

समुत्कर्ष, मकान नं. 9, वार्ड नं. 16, नजदीक राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय नं.2 के सामने, पुरानी आबादी, श्रीगंगानगर–335001 (राजस्थान)